वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

ओ३म्

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 16 अंक 21 कुल पृष्ठ-8 11 से 17 फरवरी, 2021 दयानन्दाब्द 197 सृष्टि सम्वत् 1960853121 सम्वत् 2077 मा. कृ.-15

तपोनिष्ठ व्यक्तित्व के धनी अनेक विद्वानों का निर्माण करने वाले रामपाल दास जैसे पाखण्डी के विरुद्ध प्रचण्ड आन्दोलन के प्रणेता आचार्य बलदेव जी महाराज की पुण्यतिथि पर गुरुकुल कालवा (जीन्द) में विशाल प्रेरणा सभा सम्पन्न

निर्माण एवं आन्दोलन में बीता आचार्य बलदेव जी का पूरा जीवन

– स्वामी आर्यवेश

अन्याय एवं पाखण्ड के विरुद्ध संघर्ष करना ही आचार्य बलदेव जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी

– स्वामी नित्यानन्द

संस्कृत को बढ़ावा देने के लिए गुरुकुल शिक्षा को सशक्त बनाया जाये

– स्वामी सम्पूर्णानन्द

वीतराग आचार्य एवं विद्वान् थे आचार्य बलदेव

– स्वामी यज्ञमुनि

आर्य समाज को एकजुट होकर कार्य करना होगा

– आचार्य विजयपाल

अनेकों युवा विद्वान् तैयार करके आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले वीतराग आचार्य बलदेव जी महाराज की पुण्यतिथि के अवसर पर 1 फरवरी, 2021 को गुरुकुल कालवा, जीन्द हरियाणा में विशाल प्रेरणा सभा का आयोजन किया गया। इस सभा की अध्यक्षता वयोवृद्ध संन्यासी और आचार्य बलदेव जी के परमसहयोगी स्वामी वेदरक्षानन्द जी महाराज ने की। मंच का संचालन युवा संन्यासी स्वामी गणेशानन्द जी ने संभाला। इस अवसर पर गुरुकुल के वर्तमान आचार्य तथा आचार्य बलदेव जी के उत्तराधिकारी आचार्य राजेन्द्र जी के अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, हरियाणा नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी, सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री स्वामी नित्यानन्द जी, युवा संन्यासी स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, गुरुकुल चित्तौड़ाझाल (मुजफ्फरनगर) के संचालक स्वामी यज्ञमुनि जी, गुरुकुल झज्जर के संचालक आचार्य विजयपाल जी, युवा संन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती, योगधाम ज्वालापुर के संचालक स्वामी मेधानन्द जी, गुरुकुल लाढ़ौत (रोहतक) के संचालक आचार्य हरिदत्त जी, राजार्य सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य चन्द्रदेव जी, स्वामी आत्मानन्द जी, आत्मानन्दमुनि जी, स्वामी जितेन्द्रानन्द जी, ब्रह्मचारी रामस्वरूप आर्य, युवा विद्वान् आचार्य यशवीर जी, युवकक्रांति के प्रतीक तेजस्वी ब्रह्मचारी अग्निदेव आर्य जी आदि अनेक संन्यासियों एवं विद्वानों ने उपस्थित होकर श्रद्धेय आचार्य बलदेव जी को श्रद्धा पुष्प अर्पित किये।

अपने उद्बोधन में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आचार्य बलदेव जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे जहां युवा विद्वान् तैयार करने में लगे रहे वहीं उन्होंने सामाजिक क्षेत्र में आन्दोलन को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। उनकी मान्यता थी कि समाज में वैदिक संस्कृति के प्रचार–प्रसार के लिए जहां उच्चकोटि के विद्वानों की आवश्यकता है वहीं समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध आन्दोलन भी आवश्यक है। उन्होंने गोहत्या तथा धार्मिक पाखण्ड के विरुद्ध अनेक आन्दोलन चलाये। उनके आन्दोलन के परिणाम स्वरूप रामपाल दास जैसे पाखण्डी को जेल के सीखचों के पीछे जाना पड़ा। विदित हो कि रामपाल दास महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा समस्त ऋषि–मुनियों एवं वेदों पर अनर्गल टीका–टिप्पणी एवं असत्य बातें कहकर जनता में भ्रम फैला रहा था। इसके विरुद्ध आचार्य बलदेव जी के नेतृत्व में प्रचण्ड आन्दोलन चलाया गया जिसमें चार नवयुवक भी शहीद हुए और अन्त में अहंकारी रामपाल दास को जेल जाना पड़ा। स्वामी आर्यवेश जी ने आचार्य बलदेव जी को श्रद्धांजलि देने के लिए आये सभी आर्यजनों का आह्वान किया कि आर्य समाज का इतिहास अनेक आन्दोलनों का साक्षी है। स्वतंत्रता आन्दोलन से लेकर हैदराबाद आन्दोलन, हिन्दी आन्दोलन, गोरक्षा आन्दोलन, 1973 का किसान आन्दोलन, सतीप्रथा के विरुद्ध आन्दोलन, शराबबन्दी आन्दोलन और बेटी बचाओ आन्दोलन हम सभी को इस बात के लिए प्रेरित करते हैं कि अन्याय, अत्याचार, पाखण्ड तथा सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आर्यों को डटकर आन्दोलन करने चाहिए जिससे समाज का उपकार हो सके और आर्य समाज आम जन मानस से जुड़ सके। पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के साथ गुरुकुल कालवा के प्रारम्भिक दिनों में मुझे कई बार आने का अवसर मिला था। किन्तु आज गुरुकुल का विकास देखकर आचार्य बलदेव जी की कर्मठता का परिचय हो रहा है।

वर्तमान में चल रहे किसान आन्दोलन का प्रबल समर्थन करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने अपील की कि किसान आन्दोलन का आर्यों को पूरा समर्थन करना चाहिए और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा उद्घोषित इस परिभाषा की, कि ''राजाओं के राजा किसान आदि परिश्रम करने वाले लोग होते हैं।'' हृदयंगम कर किसानों की जायज मांगों के लिए अपना सहयोग देना चाहिए। यदि सहयोग न दे सकें तो कम से कम किसानों का विरोध नहीं करना चाहिए। स्वामी आर्यवेश जी ने आचार्य बलदेव जी के पद्चिन्हों पर चलने के लिए यह आवश्यक बताया कि विद्वान् तैयार करने की इस समय महती आवश्यकता है जिसके लिए विशेष प्रयास होने चाहिए। क्योंकि बुजुर्ग विद्वान् धीरे–धीरे कम होते जा रहे हैं और नये विद्वानों का निर्माण धीमी गति से हो रहा है। आर्य समाज के सभी प्रबुद्ध लोगों को इस सम्बन्ध में गम्भीरता से विचार करना चाहिए।

स्वामी सम्पूर्णानन्द जी ने संस्कृत भाषा की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संस्कृत को बढ़ावा देने के लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर बल देना होगा। गुरुकुलों के माध्यम से ही संस्कृत की रक्षा हो सकती है। उन्होंने आचार्य बलदेव जी को संस्कृत एवं व्याकरण का महापंडित बताया और उनको सच्ची श्रद्धांजलि देते हुए घोषणा की कि उनके अधूरे कामों को पूरा करने के लिए हम सब संकल्पबद्ध होकर कार्य करेंगे।

शेष पृष्ठ 5 पर

धर्म शहीद बाल हकीकतराय

– पं. नन्दलाल निर्भय

हमारा प्यारा आर्यवर्त (भारतवर्ष) ईश्वर भक्त धर्मात्माओं, वीर शहीदों की पावन भूमि है। जिन वीरों ने देश धर्म मानवता की रक्षा में अपना जीवन न्यौछावर कर दिया था। उन्हीं वीरों में से एक था धर्म शहीद हकीकतराय। हकीकतराय का बलिदान मोहम्मदशाह रंगीला के शासन काल में बसंत पंचमी के दिन 1734 ई. में हुआ था। उसकी याद में अभी भी आर्य समाज तथा अन्य धार्मिक संस्थाएँ बसंत पंचमी के दिन शहीद दिवस धूमधाम से मनाते हैं।

हकीकतराय का जन्म 1728 ई. में सियालकोट पूर्व पंजाब (पाकिस्तान) में हुआ था। उसके पिता का नाम भागमल महाजन तथा माता का नाम कौरा देवी था। बाल विवाह की प्रथा के अनुसार अज्ञानतावश हकीकतराय का विवाह सन् 1732 ई. में बटाला की लक्ष्मी देवी के साथ कर दिया गया। हकीकतराय के माता–पिता धार्मिक एवं ईश्वर भक्त थे। इसलिए हकीकतराय भी धार्मिकवृत्ति का था। हकीकतराय को सात वर्ष की आयु में सियालकोट के एक मदरसे (पाठशाला) में प्रवेश दिलाया गया। यह कुशाग्र बुद्धि का बालक था। इसलिए मौलवी साहिब (अध्यापक) इस पर बेहद प्यार करते थे। यह देखकर मुसलमान बच्चे हकीकतराय से भारी ईर्ष्या करते थे।

एक दिन मौलवी साहिब जरूरी काम से पाठशाला से बाहर चले गए तथा पाठशाला की देखभाल करना हकीतराय को सौंप गए। मौलवी साहिब के चले जाने पर मुस्लिम बच्चों ने हुड़दंग मचाना शुरू कर दिया। हकीकतराय ने जब उन्हें ऐसा करने से रोका तो उन्होंने हकीकतराय को गालियाँ दी और बुरी तरह से पीटा। मौलवी साहिब के आने पर हकीकतराय ने उसे सारा किस्सा सुना दिया। मौलवी साहिब ने हकीकतराय को पुचकारकर अपनी छाती से लगा लिया तथा मुसलमान बच्चों को दण्डित किया। मुसलमान बच्चों ने नाराज होकर हकीकतराय पर बीबी फातिमा को गालियाँ देने और मौलवी साहिब पर हकीकतराय की तरफदारी करने का आरोप लगाकर नगर के काजी सुलेमान से दोनों की शिकायत कर दी।

उन दिनों काजियों का बोलबाला था। इसलिए काजी सुलेमान ने हकीकतराय को मुसलमान बनाने का फतवा जारी किया तथा घोषणा कर दी कि अगर हकीकतराय मुसलमान न बने तो उसका सिर कटवा दिया जाए। काजी ने फतवा जारी करके नगर के हाकिम अमीरबेग को सौंप दिया। अमीरबेग एक शरीफ आदमी था। उसने काजी सुलेमान को समझाया कि यह बच्चों का झगड़ा है इसे ज्यादा बढ़ाना समझदारी नहीं है किन्तु काजी नहीं माना। कुछ मुसलमान भी काजी के समर्थक बन गए इसलिए अमीरबेग ने सारा मामला लाहौर के नवाब सकेदखान की अदालत में भेज दिया। भागमल और कौंरा देवी कुछ हिन्दुओं को साथ लेकर लाहौर पहुँचे तथा नवाब से हकीकतराय को माफ कर देने की प्रार्थना की।

लाहौर के नवाब ने सारे मामले को ध्यान से पढ़ा और सुना। दोनों पक्षों की बातें सुनकर तथा हकीकत की सुन्दर सूरत कम उम्र को देखकर हकीकतराय से खुश होकर कहा –

बाल हकीकतराय! मान तूँ बात एक बेटा मेरी।
मुसलमान बन जान बचा ले, ज्यादा मत कर तू देरी।
अपनी सुन्दर बेटी के संग, निकाह करा दूँगा।
अपनी सारी दौलत का मैं, मालिक तुझे बना दूँगा।
रख मेरा विश्वास लाड़ले, बैठा मौज उड़ाएगा।
सोच–समझ ले बेटा मन में, बात अगर ना मानेगा।
पछतायेगा जीवन भर तू, यदि ज्यादा जिद ठानेगा।।

नवाब की बातें सुनकर हकीकतराय ने गम्भीरतापूर्वक नवाब से पूछा– 'नवाब साहिब, आप मुझे पहले एक बात बता दो, यदि मैं मुसलमान बन जाऊँ तो मैं कभी मरूँगा तो नहीं?इन काजी और मौलवियों से भी पूछ लो कि ये और आप भी क्या सदा जीवित रहोगे?नवाब ने सिर नीचा करके कहा – 'बेटा हकीकतराय संसार में जो जन्म लेता है वह अवश्य ही मरता है। मैं भी मरूँगा, तू भी मरेगा और काजी, मौलवी भी जरूर मरेंगे। बेटा, मैं पुत्रहीन हूँ अगर तू मेरी दुख्तर से निकाह कर लेगा तो मेरी सम्पत्ति का मालिक बन जायेगा और जीवनभर मौज उड़ाएगा। अरे हकीकतराय, अब तू ठीक तरह सोच समझ कर उत्तर दे बेटा।'

नवाब का प्रस्ताव सुनकर हकीकतराय मुस्कराते हुए बोला–

यह सृष्टि का है नियम अटल, जो इस दुनियाँ में आता है।
वह कर्मों का फल पाता है, ईश्वर न्यायकारी दाता है।।
जब आप मानते हो इसको, मृत्यु सबको खा जाती है।
वह घोर नर्क में जायेगा, जो नर पापी उत्पाती है।।
मैं राम–कृष्ण का वंशज हूँ, मैं वैदिक धर्म निभाऊँगा।
लालच के चक्कर में फंसकर, इस्लाम नहीं अपनाऊँगा।।

हकीकतराय का उत्तर सुनकर नवाब भारी नाराज हो गया और हकीकतराय पर रौब जमाते हुए बोला –

तू कान खोलकर सुन लड़के, मैं अब जल्लाद बुलाऊँगा।
मैं तेग दुधारी के द्वारा, तेरे सिर को कटवाऊँगा।।
गुस्ताख बड़ा है तू लड़के, मैंने तुझको पहचान लिया।
तू नर्मी के ना लायक है, यह मेरे दिल ने मान लिया।।
तू बातूनी मत बन ज्यादा, ले बात मान सुख पायेगा।
छोटी सी उम्र में तू पगले, वृथा ही मारा जायेगा।।

हकीकत राय ने जब नवाब की बातें सुनी तो गरजते हुए बोला –

तू अन्यायी सुन कान खोल, क्यों ज्यादा बात बनाता है।
मेरी तो मौत सहेली है, तू जिसका खौफ दिखाता है।।
अमर आत्मा तन नश्वर है, वेद शास्त्र दर्शाते हैं।
धर्मवीर, बलिदानी मानव, जग में पूजे जाते हैं।।
मैं साफ बताता हूँ पापी, तू घोर नर्क में जायेगा।
इस दुनियाँ का हर नर–नारी, अत्याचारी बतलायेगा।।
मेरा यह बलिदान दुष्ट सुन, कभी न खाली जायेगा।
इस आर्यवर्त का हर मानव, वीरों की गाथा गायेगा।।
धर्मवीर, बलवानों की गाथा, नर–नारी गाते हैं।
तेरे जैसे अत्याचारी, नफरत से देखे जाते हैं।।

हकीकतराय की निर्भीकता देखकर नवाब आने से बाहर हो गया और उसने जल्लाद को बुलाकर हकीकतराय का सिर काटने का हुक्म दे दिया। हकीकतराय उस समय हंस रहा था। जल्लाद ने जब हकीकतराय की कम उम्र तथा सुन्दरता को देखा तो उसका भी पत्थर दिल पिघल गया तथा तलवार उसके हाथ से गिर गई। यह देखकर हकीकतराय ने जल्लाद को समझाते हुए कहा – "अरे भाई जल्लाद! तू अपना फर्ज पूरा कर और मुझे भी अपना धर्म निभाने दे। कहीं मेरी वजह से तेरे ऊपर भी कोई मुसीबत न आ जाए। जल्लाद ने अपने आंसुओं को पोंछकर तलवार उठाकर हकीकतराय की गर्दन पर भरपूर वार किया जिससे हकीकतराय का सिर कटकर लुढ़क गया। धन्य था धर्म शहीद बाल हकीकतराय जिसने अपना सिर कटवा कर भारत माता का सर (मस्तक) संसार में ऊँचा कर दिया जब तक सूरज, चाँद–सितारे और पृथ्वी रहेगी। यह संसार उस वीर शहीद की बलिदान गाथा गाता रहेगा।

सज्जनों कुछ लोगों का विचार है कि बाल हकीकतराय का बलिदान मुगलबादशाह शाहजहा के शासनकाल में हुआ था। तथा शाहजहाँ ने न्याय करते हुए नवाब और काजियों, मौलवियों को मृत्यु दण्ड दिया था किन्तु यह सत्य से कोसों दूर एवं निराधार है।

शाहजहाँ के पुत्र औरंगजेब की मृत्यु सन् 1707 में हुई थी तथा हकीकतराय का बलिदान सन् 1734 में हुआ था। फिर उस समय शाहजहाँ कहाँ से आ गया?वास्तव में यह सब मुसलमान शासकों एवं इतिहासकारों की हिन्दुओं को मूर्ख बनाने की एक सोची–समझी चाल है। हमें विधर्मी लोगों के षड्यन्त्र से सदैव सावधान रहना चाहिए। सच्चाई तो यह है कि उस समय मोहम्मद शाह रंगीला का कुशासन था जो शराब पीकर औरतों के साथ दिल्ली के लाल किले में नाचता रहता था। ज्ञातव्य है कि ईरान के हमलावर नादिरशाह ने उसे शराब पीये हुए जनाने कपड़ों में गिरफ्तार करके उसके हरम की हजारों स्त्रियों को अपने सैनिकों में बाँट दिया था तथा तख्ते ताउसा को लूटकर ईरान ले गया था।

आर्यो! आज भारत में छूआछूत, ऊँच–नीच, जाति–पाति का बोल–बाला है। उग्रवाद, आतंकवाद बढ़ रहा है, भारत के नेतागण भ्रष्टाचार की कीचड़ में लिप्त है। विधर्मी लोग रात–दिन भारत की गरीब जनता को ईसाई मुसलमान बनाने में लगे हुए हैं। धर्म के नाम पर पशु–पक्षियों की बलि दी जाती है। सीमा पर चीन और पाकिस्तान भारत पर आक्रमण करने को तैयार खड़े हैं। ऐसे घोर संकट में भारत को वीर शहीद बाल हकीकत राय जैसे ईश्वर भक्त, धर्मात्मा, देशभक्त युवक–युवतियों की आवश्यकता। परमात्मा से अन्त में यही प्रार्थना है –

हे भगवान! दया के सागर, भारत पर तुम कृपा कर दो।
भारत माँ की गोद दयामय, वीर सपूतों से अब भर दो।।
वैर हकीकत राय सरीखे, भारत में पैदा हो बच्चे।
धर्मवीर, ईश्वर विश्वासी, आन–बान के हो जो सच्चे।।
जिसमें ऋषियों का यह भारत, सारे जग का गुरु कहाए।
भूखा नंगा आर्यवर्त में, कोई कहीं नजर न आए।।

– ग्राम व पो.–बहीन, जनपद–फरीदाबाद, हरियाणा

वीर हकीकत राय

– पं. नन्दलाल निर्भय

धर्मवीर था वीर हकीकत, देश धर्म पर प्राण गंवाया।
भोला भाला प्यारा बालक, मृत्यु गले से शीघ्र लगाया।
तुर्कों का आतंक बढ़ा था,
जबरन मुस्लिम बना रहे,
चोटी यज्ञोपवीत देखते,
सब मिलकर के सता रहे।
आर्य धर्म जाने न पाए, सच्चा उसने प्रण अपनाया।
धर्मवीर था वीर हकीकत, देश, धर्म पर प्राण गंवाया।।
भय आतंक दिखा के हारे,
तब लालच का जाल बिछाया,
वीर अड़ा था आन पे अपनी,
सर अपना था नहीं झुकाया।
अधिकारी शिसियाए मन में, हाथों में हथियार उठाया।
धर्मवीर था वीर हकीकत, देश धर्म पर प्राण गंवाया।।
शीश चाहते हो तुम ले लो,
इसका कोई नहीं मुझे गम।
धर्म न दूँगा मरते दम तक,
सच्चा जानो निश्चय मम।
धर्म जाति पर बलि–बलि जाऊँ, इतना कहकर मृत्यु बुलाया।
धर्मवीर था वीर हकीकत, देश धर्म पर प्राण गंवाया।।

–ग्राम व पो.–बहीन, जनपद–फरीदाबाद, हरियाणा

नवजीवन, नवोत्साह एवं साहसी देशभक्त वीरों के अमर बलिदानों का प्रतीक

'ऋतुराज बसन्त'

— सत्यबाला देवी

नव जीवन के प्रतीक प्रकृति नटी के अनुपम सौन्दर्य एवं मातृभूमि के गौरव, सम्मान एवं स्वतन्त्रता की रक्षा हेतु दीवाने और साहसी वीरों के अमर बलिदानों के महापर्व ऋतुराज बसन्त के शुभागमन से समस्त चराचर सृष्टि में हर्ष उल्लास, उमंग एवं उत्साह का सागर हिलोरें लेने लगता है। समस्त प्राकृतिक वातावरण में शोभा और सौन्दर्य बिखर जाता है। प्रकृति सुन्दरी नव पल्लवों का हरित परिधान धारण किए, नाना रंग बिरंगे कुसुमों के विविध आभूषणों से अलंकृत सरसों के पीत वर्ण पुष्पों की बासन्ती साड़ी से आवेष्टित, सोलह श्रृंगार किए सजी संवरी नई नवेली दुल्हन सी अपने प्रियतम बसन्त का अभिनन्दन करने हेतु उद्यत हो उठती है। यही नहीं कल–कल निनादिनी पुण्य सलिला सरिताएँ भी ऋतुराज बसन्त का अभिषेक करने हेतु उत्सुक हो उठती है। पुष्प गुच्छों पर गुञ्जार करते हुए मधुपान द्वारा तृप्त मस्त भ्रमरगण, कलरव करते विविध विहंग समूह, आम्रकुंजों में पंचम स्वर अलापती उन्मत्त कोकिला आदि मानों बन्दी गणों के रूप में ऋतुराज की अभ्यर्थना करते हुए, उसका प्रशस्ति गान कर एक निराले ही रहस्यमय लोक का सृजन कर, अखिल सृष्टि को मधुरिम प्रेम का सन्देश वहन करते हुए समस्त वातावरण को प्रेममय प्रेरणादायक, स्फूर्तिमय, उत्साहवर्धक, स्निग्ध, मधुर, सरस एवं मनोहर बना देते हैं। जिस पादप समूह को आततायी पतझड़, पत्र पुष्प विहीन कर ठूंठ सदृश, जीर्ण–शीर्ण एवं जर्जर बना देता है, बसन्त का आविर्भाव उन्हें पुनः नव–किसलय दल से सुसज्जित कर, अनुपम सौन्दर्य वैभव से अलंकृत कर नवजीवन प्रदान कर देता है। भयंकर शीत से चराचर सृष्टि को उत्पीड़ित एवं त्रस्त करने वाले शिशिर की विदा और नवोल्लास के प्रतीक ऋतुराज बसन्त के अवतरण से समस्त जड़ चेतन उसी प्रकार उल्लसित एवं आनन्द मग्न हो उठते हैं, जिस प्रकार किसी अत्याचारी शासक के पराभव से समस्त प्रजाजन सुख–शान्ति और निश्चिन्तता का अनुभव कर आनन्द विभोर हो उठते हैं। बसन्त के आविर्भाव से समस्त वातावरण नव आभा, नव ज्योति, नव–छटा नव–सौन्दर्य एवं नव–आलोक से ज्योतिर्मान हो उठता है। मन्द–मन्द प्रवाहित, शीतल सुगन्धित दक्षिणी मलय समीर नव–विकासित पुष्प–दलों से अठखेलियाँ करने लगती है जिसके फलस्वरूप समस्त मानव–समाज नाच–रंग, गायन–वादन आदि नाना आमोद–प्रमोदों एवं विविध मनोरंजक क्रीड़ाओं में मग्न हो आत्म विस्मृत हो उठता है। अखिल विश्व में ऋतुराज बसन्त का अखण्ड साम्राज्य प्रतिष्ठित होने के फलस्वरूप मानव–जीवन में नहीं अपितु पशु–पक्षियों तक के हृदयों में भी नवोत्साह, नव–अभिलाषा, नवआशा, नव–चेतना, नव–जागरण एवं नव–स्फूर्ति का संचार होने लगता है। समस्त सृष्टि में विरला ही कोई हत भाग्य होगा जिसे कामन मयूर बसन्त की मनोमुग्धकारी, ज्योत्सनामय, अपूर्व, अनिबर्चनीय नयनाभिराम उज्ज्वल दैवीय बासन्तिक छटा को निरखकर नाच न उठता हो।

ऋतुराज बसन्त के आविर्भाव पर संवेदनशील रसिक कवि हृदय का तो कहना ही क्या वह तो ऋतुराज के इस अद्वितीय दिव्य सौन्दर्य पर मुग्ध हो उसकी सार्वभौमिक विजय का गुणगान करने लगता है। विश्व के अनेक कविजनों ने ऋतुराज की अनुपम शोभा और अपूर्व छटा का चित्रण कर अपनी लेखनी को चित्रकारों ने अपनी तूलिका को धन्य किया है। कविकुल चूड़ामणि महाकवि कालिदास ने 'कुमार सम्भव में बसन्त का इतना सरस, सजीव और हृदयग्राही चित्रण किया है कि रसिक पाठक गण उसे पढ़ते–पढ़ते आत्म विभोर और मन्त्र मुग्ध हो उठते हैं। कवि कुल शिरोमणि जयदेव, मैथिल कोकिल विद्यापति, महाकवि केशव प्रभृति कवि जनों के काव्य में तो बसन्त इठलाता सा दृष्टिगोचर होता है। जायसी की विरह दग्धा नायिका नागमति तो बसन्त के अलौकिक, दिव्य बासन्तिक सौन्दर्य की अनुपम छटा का अवलोकन कर अपनी विरह व्यथा ही नहीं प्रत्युत अपने प्राण स्वरूप प्रियतम को भी विस्मृत कर मस्ती में झूमने लगती है। भारतीय काव्य गगन के चन्द्र महाकवि तुलसी दास ने भी रामचरित मानस में बसन्त की बासन्तिक शोभा का चित्रांकन कर नव चेतना एवं नव–संकल्प का शुभ–संदेश दिया है। रीति–कालीन कवियों को तो पग–पग और डगर–डगर में बसन्त ही बिखरा दृष्टिगोचर होता है।

योगराज भगवान श्रीकृष्ण ने भी कुरुक्षेत्र के युद्ध प्रांगण में मोह ग्रस्त अर्जुन को अन्याय और अत्याचार का दमन करने और आततायी कौरवों के विरुद्ध लोहा लेने के लिए नव–साहस का सन्देश देते हुए उसमें दुष्ट दलन, पौरुष, वीरता और लोक कल्याण की भावना जागृत करने हेतु कहा था। ''ऋतुनाम कुसुमाकरः।'' छायावादी युग की प्रतिनिधि कवयित्री महादेवी वर्मा भी, अनुपम यौवनमयी, सौन्दर्यमयी प्रकृति प्रदत्त आभूषणों एवं आभरणों से समअलंकृत बसन्त रजनी का आह्वान करती हुई कहती है,'' धीरे–धीरे उतर क्षितिज से ऐ! बसन्त रजनी! तारकमय नववेणी बन्धन,'' इत्यादि। वस्तुतः बसन्त रजनी के चेतन, व्यापक, मनोमुग्धकारी व्यक्तित्व का दर्शन कराता है। अनन्त शक्तिशाली, नवचेतना जागृत करने वाले ऋतुराज बसन्त के विश्वव्यापी प्रभाव से तपोवन भी अछूते नहीं रहते। जिसके फलस्वरूप तपोवनों की शान्त उन्मुक्त, स्निग्ध, ज्योत्सनामयी सुरम्य प्राकृतिक बासन्तिक छटा तपोधनी महर्षियों के हृदयों में भी अनन्तता के भाव जागृत करने में समर्थ होती रही है। फलतः वे आत्म–साधन के साथ–साथ आध्यात्मिक चिन्तन में दत्तचित्त हों उस अनन्त सौन्दर्यशाली परम शक्ति समन्वित, निराकार निर्विकार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी प्रभु का साक्षात्कार करने में भी सफल होते रहे हैं।

यही नहीं ऋतुराज बसन्त मातृभूमि के लाडले साहसी वीर देशभक्त नौजवानों को भी देश की स्वाधीनता और गौरव की रक्षा हेतु देश प्रेम की बलि वेदी पर हंसते–हंसते प्राणोत्सर्ग करने की भी प्रेरणा देता रहा है। जहाँ एक ओर यह महापर्व सहृदय, रसोन्मत्र मानव–हृदयों में रणोल्लास एवं आत्मोत्सर्ग की भावना का उदय कर उन्हें आततायी, देशद्रोही एवं पावन स्वर्गतुल्य सुखद मातृभूमि को पदाक्रान्त करने की इच्छुक शत्रु की विशाल वाहिनी से जूझने की शक्ति और साहस भी प्रदान करता रहा है। इसी भावना के वशीभूत हो हमारे शूरवीर और निर्भय राजपूत सैनिक केसरिया बाना पहन, वीररस में उन्मत्त हो, प्राणों का मोह त्याग, रणघोष सुनते ही शत्रु सैन्य पर टूट पड़ते और उससे लोहा लेते हुए या तो समस्त शत्रु–शत्रु सैन्य का विध्वंस कर विजयोल्लास में मत्त हो बसन्तोत्सव मनाया करते थे अथवा स्वयं जौहर व्रत धारण कर मातृभूमि की स्वतन्त्रता और सन्मान की रक्षा हेतु एक–एक करके वीरगति को प्राप्त हो जाते थे पर कभी भी शत्रु को पीठ दिखाकर कायरों की तरह रणभूमि से पलायन नहीं करते थे। पुरजा–पुरजा कट मरे तऊ न छाड़े खेत।' दूसरी ओर वीरांगना राजपूत ललनाएँ भी अपनी आत्मरक्षा हेतु पूजा की थाली लिए अपने साहसी वीरों का अनुगमन करते हुए जौहर व्रत का अनुष्ठान करने हेतु प्रज्ज्वलित चिता में कूद पड़ती थी। अतः वीर हृदयों में इस प्रकार अदमनीय देश की स्वाधीनता की रक्षा हेतु साहस, अपूर्व वीरता, अद्भुत शौर्य, महान आत्म त्याग एवं अभूतपूर्व आत्म बलिदान की भावना का उदय करने वाला ऋतुराज बसन्त वस्तुतः सत्यार्थों में ऋतुराज कहलाने का अधिकारी है। इसी भावना को लक्ष्य कर श्रीमती सुभद्रा कुमारी, चौहान ने अपनी ओजस्विनी कविता, ''वीरों का कैसा हो बसन्त'' में भारतीय वीरों द्वारा सत्यार्थों में बसन्त मनाने का चित्रांकन किया है। जिसका साक्षी आज भी भारत का प्रहरी स्वरूप हिमाचल, पानीपत, कुरुक्षेत्र, हल्दी घाटी तथा राजस्थान के अब रण–प्रांगण एवं 1857 के प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में झांसी की रानी सम वीरांगनाओं और मंगल पाण्डे समान देशभक्तों समान देश प्रेम की बलिवेदी पर प्राण न्यौछावर करने वाले वीरों की गाथाएँ सुना रही हैं।

ऋतुराज बसन्त मातृभूमि के लाडले साहसी वीर देशभक्त नौजवानों को भी देश की स्वाधीनता और गौरव की रक्षा हेतु देश प्रेम की बलि वेदी पर हंसते–हंसते प्राणोत्सर्ग करने की भी प्रेरणा देता रहा है। जहाँ एक ओर यह महापर्व सहृदय, रसोन्मत्र मानव–हृदयों में रणोल्लास एवं आत्मोत्सर्ग की भावना का उदय कर उन्हें आततायी, देशद्रोही एवं पावन स्वर्गतुल्य सुखद मातृभूमि को पदाक्रान्त करने की इच्छुक शत्रु की विशाल वाहिनी से जूझने की शक्ति और साहस भी प्रदान करता रहा है। इसी भावना के वशीभूत हो हमारे शूरवीर और निर्भय राजपूत सैनिक केसरिया बाना पहन, वीररस में उन्मत्त हो, प्राणों का मोह त्याग, रणघोष सुनते ही शत्रु सैन्य पर टूट पड़ते और उससे लोहा लेते हुए या तो समस्त शत्रु–शत्रु सैन्य का विध्वंस कर विजयोल्लास में मत्त हो बसन्तोत्सव मनाया करते थे अथवा स्वयं जौहर व्रत धारण कर मातृभूमि की स्वतन्त्रता और सन्मान की रक्षा हेतु एक–एक करके वीरगति को प्राप्त हो जाते थे पर कभी भी शत्रु को पीठ दिखाकर कायरों की तरह रणभूमि से पलायन नहीं करते थे।

भारत माँ के वक्ष स्थल स्वरूप पंचनद (पंजाब) के वीरों साहसी सपूतों ने अपनी मातृभूमि से सदैव यही वरदान एवं शुभाषीष मांगी है, 'मेरा रंग दे बसन्ती चोला माए री मेरा रंग दे बसन्ती चोला', और ऐसा ही अलौकिक बसन्ती चोला धारण कर शहीद भगतसिंह और उनके साथी वीरों ने, पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ी मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने हेतु हंसते–हंसते फांसी के फन्दों को चूम कर गले लगा लिया था।

ऋतुराज बसन्त के उस पावन महापर्व को एक अन्य अभूतपूर्व बलिदान ने और भी चार चान्द लगा दिए हैं। इसी पवित्र पर्व के दिन धर्मवीर, दृढ़व्रती चतुर्दश वर्षीय वीर बालक हकीकत राय ने वैदिक धर्म की रक्षा हेतु तुच्छ प्राणों का मोह त्याग, अपने अमर बलिदान तत्कालीन आततायी नृशंस मलेच्छ शासक का गर्व चूर्ण किया था। कहना न होगा कि ऋतुराज बसन्त द्वारा ही उस वीर बाल हृदय में भी धर्म की बलिवेदी पर प्राणोत्सर्ग करने की प्रेरणा प्रदान की गई थी। पर यह कहना भी अत्युक्ति न होगी कि वीर बालक हकीकत के इस अमर बलिदान ने ऋतुराज बसन्त को महत्त्वपूर्ण, गौरवशाली और प्रभावशाली बना दिया था।

बसन्त के महान् पर्व के दिन वीर बालक हकीकत ने अपने जिस अद्भुत आत्म त्याग, अपूर्व निर्भयता, अदम्य साहस, दृढ़ संकल्प एवं अद्वितीय धार्मिक आस्था, विश्वास और श्रद्धा का परिचय दिया उन्हीं अमिट पद चिन्हों का अनुसरण करते हुए धर्म प्रधान भारत की भावी पीढ़ियाँ चिरन्तन काल तक देश और धर्म की बलि वेदी पर हंसते–हंसते आत्म बलिदान करने के लिए सतत् तत्पर रहेंगी। हकीकत का बलिदान किसी व्यक्ति विशेष का बलिदान नहीं वह तो स्वधर्म, स्वजाति एवं स्वदेश हित प्राणोत्सर्ग करने वाले साहसी, निर्भय शूरवीरों के आत्म बलिदान का प्रतीक है। अन्याय, अत्याचार, उत्पीड़न और शोषण के सन्मुख शीश न झुकाने वाले महान् त्यागी हृदयों का आदर्श है। वीर हकीकत पंचनद की उसी वीर प्रसू पावन भूमि पर अवतरित हुआ जिसके साहसी वीर सपूतों को मातृभूमि की स्वतन्त्रता का अपहरण कर उसे पराधीनता की अवमेघ लौह श्रृंखलाओं में आबद्ध करने वाले, उसे पदाक्रान्त एवं पददलित करने की कुत्सित इच्छा से पूर्ण विदेशी दस्युओं से सदैव लोहा लेने एवं आत्मोत्सर्ग करने का गौरव प्राप्त होता रहा है। इसीलिए यह वीर भूमि शाश्वत काल से उसी प्रकार अपने दिव्य पुत्रों के अमर बलिदान अर्पित कर बसन्त के शुभागमन का स्वागत उनके रक्त से करती रही है। ऐसे ही निर्भय, साहसी देशभक्त वीरों ने अनेक बार देश और धर्म की नैराश्य पूर्ण, साहस विहीन, दुःख दैन्य ग्रस्त, अभाव पीड़ित परिस्थितियों में पुनः बसन्त का अवतरण कर उसे सुख सौभाग्य, समृद्धि रूपी पत्र पुष्प समन्वित और बल वैभव से सम्पन्न करने का दृढ़ संकल्प पूर्ण किया है। यद्यपि इस दृढ़ व्रत के पालनार्थ उन्हें नाना यातनाएँ भी सहन करनी पड़ी, आजन्म आपद्विपदाओं की विशाल वाहिनी से जूझना पड़ा। यहीं नहीं प्रत्युत अपने प्राण तक भी विसर्जित करने पड़े पर फिर भी उन्होंने साहस नहीं छोड़ा।

बसन्त का यह पावन शुभ पर्व प्रतिवर्ष हमें उन्हीं भारत माँ के सच्चे वीर सपूतों का स्मरण कराता है। आओ! आज हम सब उन अमर शहीदों का अभिनन्दन करते हुए उन्हें अपनी भाव–भीनी श्रद्धांजलि अर्पित करें। केवल बसन्ती वस्त्र धारण कर आमोद–प्रमोद में रत हों, मनोरंजन और हास–विलास के साधनों में संलग्न होकर ही हमारा बसन्तोत्सव मनाना सार्थक नहीं हो सकता प्रत्युत ऋतुराज के आविर्भाव द्वारा नव–जागरण नवोत्साह, नव–चेतना, नव–प्रेरणा एवं नवजीवन का सन्देश ग्रहण कर हमें राष्ट्र के जीवन में सत्यार्थों में बसन्त लाने का प्रयत्न करना होगा ताकि भारतीय जन–जीवन पूर्णतया सुखी, सम्पन्न, समृद्ध, उन्नतिशील, विकासशील और प्रगतिशील बन सकें।

यद्यपि हमारे देश को पराधीनता की श्रृंखलाओं से मुक्त हुए साठ से भी अधिक वर्ष हो चुके हैं पर अभी तक इस अभागे देश के जन–जीवन में बसन्त का अवतरण नहीं हो सका। आज भी इस देश की पीड़ित, शोषित, अभावग्रस्त जनता निर्धनता एवं भ्रष्टाचार के जुए के नीचे दबी कराह रही है। आज भी देश में चतुर्दिक बेकारी, मंहगाई, रिश्वतखोरी, लूट–पाट, हिंसा, प्राणहन, अन्याय, अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न एवं असन्तोष का अखण्ड साम्राज्य व्याप्त है। आज भी अलगाववादी, उग्रवादी तथा आतंकवादी प्रवृत्तियों द्वारा चारों ओर निरीह, निरपराध, निर्दोष व्यक्तियों की हत्याएँ एवं राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति को ध्वस्त किए जाते देख समस्त देशवासी आतंकित और त्रस्त हो रहे हैं। समस्त जन–जीवन अस्त–व्यस्त हो गया है। जहाँ एक ओर कतिपय प्रान्तों में असुरक्षा, अव्यवस्था एवं आतंक से हाहाकर मचा हुआ है। वहाँ दूसरी ओर अधिकार प्राप्ति पद लोलुपता, कुर्सी की खींचतान शासन हथियाने, साम्प्रदायिकता, धर्मान्धता, कट्टरता, क्रूरता और बर्बरता के ताण्डव नृत्य ने समस्त वातावरण को विषाक्त, बना दिया है। वहाँ दूसरी ओर वाह्य आक्रामक शक्तियों को इस देश की अखण्डता, एकता, संगठन, समृद्धि और सुख शान्ति को मुँह बाए निगलने के लिए तत्पर होते देखकर प्रत्येक भारतवासी का हृदय अत्यधिक आत्मग्लानि, पीड़ा और व्यथा से भर उठा है।

अतः हार्दिक दुःख से कहना पड़ता है कि समस्त विश्व को मैत्री, बन्धुत्व, प्रेम, मानवता एवं आध्यात्मिकता का अमर सन्देश वहन करने वाला, धन–धान्य–समन्वित, पूर्व का यह प्रतिनिधि देश आज स्वयं ही बल वैभवहीन, मानसिक दासता में आबद्ध घोर निराशा एवं पतन के गर्त में डूब रहा है। आन्तरिक और वाह्य संघर्षों ने इसकी जड़ों को खोखला कर दिया है। एक ओर विदेशी शत्रु अपनी गिद्ध दृष्टि जमाए इसकी स्वतन्त्रता का पुनः अपहरण करने हेतु सन्नद्ध हो रहे हैं तो दूसरी ओर नाना देशद्रोही जयचन्द देश में उपद्रव और अशान्ति मचाकर उसके अनुशासन और व्यवस्था को भंग कर, इसे पुनः विदेशी शक्तियों के हाथों में सौंप अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं।

अतः ऋतुराज बसन्त के अवतरण के शुभ अवसर पर प्रत्येक भारतवासी को यह शपथ ग्रहण करनी होगी कि वह अपना सर्वस्व न्यौछावर करके भी निराशा एवं दुर्दैव रूपी शीत से पीड़ित राष्ट्र में आह्लाद्मय, सुख–सौभाग्य समन्वित जीवन रूपी शुभ बसन्त लाने के लिए सदैव कटिबद्ध रहेंगे। यही नहीं प्रातः स्मरणीय, जगत वन्द्य पूज्य बापू के अपूर्वस्वप्न को साकार करने हेतु भारत में सत्यार्थों में राम–राज्य रूपी बसन्त की प्रतिष्ठा करने में अपना सर्वस्व अर्पण करने से भी नहीं हिचकिचायेगा। तभी हम वास्तव में बसन्त मनाने के अधिकारी होंगे।

राष्ट्र जीवन तरू के इस निराशा रूपी पतझड़ को समाप्त कर इसे पुनः सुख शान्ति, समृद्धि, वैभव, शक्ति एवं आशा के नव पल्लवों और पुष्पाभरणों से समलंकृत करने का बीड़ा उठाना होगा। इस दुर्गम कण्ट–काकीर्ण पथ का अवलम्बन करने हेतु प्रत्येक भारतवासी को पूर्ण सहयोग देने के लिए अपने निजी सुखों हितों संकीर्ण स्वार्थ वृत्तियों, पद लालसा एवं अधिकार गर्व आदि सभी का त्याग करना होगा। राष्ट्रीय जीवन में बसन्त का आविर्भाव करने हेतु पूंजीवाद का सर्वथा उन्मूलन कर, समरसता, समानता, सहिष्णुता, पारस्परिक सहानुभूति आदि की प्रतिष्ठा करनी होगी। प्रत्येक भारतवासी को कठिन परिश्रम, त्यागमय जीवन को अपनाते हुए राष्ट्र दायित्वों और नागरिक कर्त्तव्यों का समुचित और सत्यता से पालन करते हुए समाज और राष्ट्रहित के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना होगा तभी हमारा बसन्तोत्सव मनाना सार्थक और सफल हो सकेगा।

● — डी–113, शिवविहार, रोहतक रोड, दिल्ली–110087

दर्शन योग महाविद्यालय एवं वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़ गुजरात के संस्थापक वयोवृद्ध योगनिष्ठ संन्यासी

स्वामी सत्यपति जी परिब्राजक का देहावसान

स्वामी सत्यपति जी महाराज का देहावसान आर्य समाज एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति

– स्वामी आर्यवेश

पैतृक गांव फरमाना (रोहतक) में किया गया विशाल श्रद्धांजलि एवं प्रेरणा सभा का आयोजन

दर्शन योग महाविद्यालय एवं वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़, गुजरात के संस्थापक योगनिष्ठ संन्यासी स्वामी सत्यपति जी परिब्राजक का दिनांक 4 फरवरी, 2021 को प्रातः 7.45 मिनट पर निधन हो गया। वे 94 वर्ष के थे। उनका अन्तिम संस्कार रोजड़ स्थित वानप्रस्थ साधक आश्रम के प्रांगड़ में दिनांक 5 फरवरी, 2021 को सैकड़ों गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। अन्तिम संस्कार से पूर्व विशाल शव यात्रा निकाली गई।

स्वामी सत्यपति जी आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् थे एवं योग दर्शन के सिद्धान्तों को अत्यन्त सरल ढंग से व्याख्यायित किया करते थे। स्वामी सत्यपति जी ने वैदिक धर्म, वेद और योग की पताका विश्वभर में फहराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्ष 1970 में प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी ब्रह्ममुनि परिब्राजक से ब्रह्मचर्य आश्रम से सीधे संन्यास की दीक्षा ग्रहण की और नाम स्वामी सत्यपति परिब्राजक रखा गया। 1970 से 1977 तक करीब 7 वर्ष वे सिंहपुरा गुरुकुल में रहे। उन्होंने वैदिक धर्म के प्रचारार्थ मॉरीशस तथा आस्ट्रेलिया सहित कई देशों का भ्रमण किया था। वर्ष 1999 में आर्यवन रोजड़ में उनका अभूतपूर्व सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। सम्मान में प्राप्त पूरी राशि आपने वानप्रस्थ साधक आश्रम को प्रदान कर दी थी।

स्वामी सत्यपति जी का जन्म एक मुस्लिम परिवार में हुआ था किन्तु अपने पूर्व जन्म के प्रबल संस्कारों के कारण वे आर्य समाज से जुड़ गये थे। वे आर्य जगत के एक ऐसे योगी व संन्यासी थे जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन योगाभ्यास, दर्शनों के अध्ययन व अध्यापन सहित ऋषि मिशन के प्रचार–प्रसार में लगाया था, ऐसे महान संन्यासी का निधन वास्तव में आर्य समाज की महती क्षति है।

दिनांक 7 फरवरी, 2021 को स्वामी सत्यपति जी की स्मृति में श्रद्धांजलि एवं प्रेरणा सभा का आयोजन उनके पैतृक गांव फरमाणा, रोहतक में किया गया। इस अवसर पर मुख्य रूप से आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि स्वामी सत्यपति जी ने योग व दर्शन के क्षेत्र में जो कार्य किये हैं वो प्राचीन वैदिक संस्कृति की पुनर्स्थापना में मील का पत्थर साबित होंगे। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि उन्होंने 7 अप्रैल 1970 को दयानंद मठ रोहतक में स्वामी इंद्रवेश जी व स्वामी अग्निवेश जी के साथ स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक से संन्यास दीक्षा लेकर अपने आप को ऋषि दयानंद के मिशन के प्रति समर्पित कर दिया। उन्होंने अपना नाम सत्यपति इसलिए रखा क्योंकि उन्होंने सत्य को मनसा, वाचा, कर्मणा पालन करने का व्रत लिया था। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि अपने जीवन में योग को आत्मसात करने वाले वे शीर्षस्थ संन्यासी थे। गुरुकुल सिंहपुरा में मुझे भी उनका सान्निध्य प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ जिससे अध्यात्म की ओर बढ़ने की मुझे प्रेरणा मिली। यह बात उन दिनों की है जब गुरुकुल सिंहपुरा की व्यवस्था स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज की देख–रेख में स्वामी चन्द्रवेश जी तथा मैं स्वयं संभालाता था और यह संयोग की बात थी कि पूज्य स्वामी सत्यपति जी महाराज का निवास भी गुरुकुल सिंहपुरा में ही था। मेरी उनसे अनेक बार आध्यात्मिक विषयों में विशेष चर्चा होती रहती थी। उनके स्वभाव में विनम्रता तथा चेहरे पर प्रसन्नता सदैव विराजमान रहती थी। स्वामी सत्यपति जी ने दर्शन योग महाविद्यालय के माध्यम से अनेक योग्य साधक नवयवुकों को वैदिक योग तथा दर्शन का प्रशिक्षण देकर आर्य समाज एवं वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार के लिए राष्ट्र को समर्पित

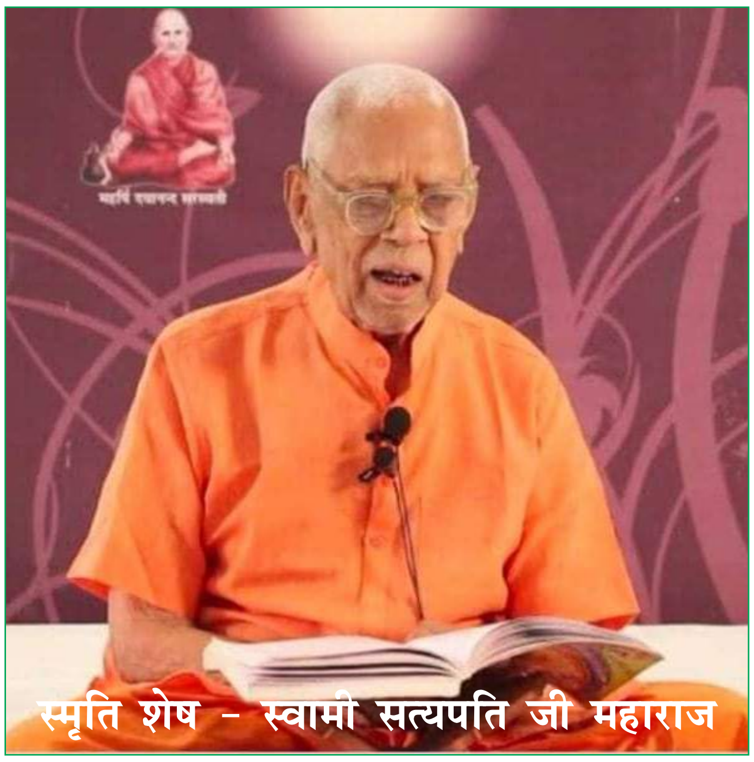

स्मृति शेष – स्वामी सत्यपति जी महाराज

किया था। जनवरी, 2021 के प्रथम सप्ताह में स्वामी सत्यपति जी की अस्वस्थता का समाचार सुनकर मैं अपने सभी वरिष्ठ साथियों विशेषतया सभामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, राजस्थान सभा के प्रधान श्री विरजानन्द एडवोकेट, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, ब्र. सोनू आर्य, स्वामी ब्रह्मानन्द तथा श्री धर्मेन्द्र आर्य सहित वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ जाकर मिला था और उनके दर्शनों का लाभ प्राप्त किया था। उन दिनों स्वामी जी स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे, मुझे आशा थी कि स्वामी जी स्वस्थ हो जायेंगे। परन्तु परमात्मा के निर्णय के समक्ष हम सबको नत–मस्तक होना ही पड़ता है। स्वामी सत्यपति जी जैसे समाजसेवा के लिए समर्पित संन्यासी का निधन आर्य समाज एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। मेरा उनको शत्–शत् नमन।

इस अवसर पर बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने कहा कि आज हमें इस दिवस को प्रेरणा दिवस के रूप में मनाना चाहिए। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने कहा कि स्वामी सत्यपति जी महाराज को श्रेय जाता है कि उन्होंने गुजरात में दर्शन योग महाविद्यालय की स्थापना करके दर्शन विद्या के क्रियात्मक स्वरूप को स्थापित करने का असाधारण कार्य किया। स्वामी जी का यह महान कार्य युगों–युगों तक भारतीय जनमानस को और आर्य समाज को ऊर्जावान बनाए रखेगा। बेटी बचाओ अभियान की संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि ग्राम पंचायत व आर्य समाज द्वारा उनके जन्मदिवस पर हर वर्ष विशेष कार्यक्रम आयोजित किये जायें ताकि नई पीढ़ी प्रेरणा ले सके।

इस अवसर पर श्री रोहताश आर्य ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। श्रद्धांजलि सभा में पार्षद प्रतिनिधि श्री मनोज पहलवान, फरमाणा बादशाहपुर के सरपंच श्री सुभाष सहारन, पूर्व सरपंच श्री कर्मवीर, श्री महावीर सिंह, पं. सुरेश चन्द्र, श्री मांगेराम प्रजापति, श्री भूपसिंह टिटौली, कु. मोनिका आर्या, कु. अंजलि आर्या आदि के अतिरिक्त श्री धर्मवीर आर्य सैमण, श्री जगदेव सिंह आर्य बहुअकबरपुर, श्री रामनिवास मालवी तथा भैनी चन्द्रपाल व मोखरा गाँव से भी आर्यजन श्रद्धांजलि देने के लिए उपस्थित थे। विशेष बात यह रही कि स्वामी सत्यपति जी के परिवारजनों की ओर से भी एक नवयुवक जिसका नाम सलीम था वह यज्ञ में यजमान बना और बड़ी श्रद्धा के साथ आहुतियाँ प्रदान की। बाद में परिवारजन स्वामी आर्यवेश जी को अपने घर भी लेकर गये और उन्होंने पूज्य स्वामी सत्यपति जी महाराज के अनेक संस्मरण भी स्वामी आर्यवेश जी को सुनाये। पूज्य स्वामी सत्यपति जी महाराज के परिवारजनों का एक सामूहिक चित्र जो उन्होंने रोजड़ जाकर स्वामी जी महाराज के साथ खिंचवाया था उसे स्वामी आर्यवेश जी को दिखाया। स्वामी आर्यवेश जी ने उनको सुझाव दिया कि वे स्वामी सत्यपति जी का एक बड़ा चित्र और एक बड़ा चित्र महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का अपने घरों में लगायें ताकि आप सबको उनकी प्रेरणाएँ मिलती रहें। श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता आर्य समाज फरमाणा के प्रधान श्री नफे सिंह आर्य ने की और मंच का संचालन आर्य समाज के मंत्री डॉ. राजेश आर्य ने संभाला। कार्यक्रम की समुचित व्यवस्था समाज के कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र सिंह, कर्मठ और समर्पित कार्यकर्ता श्री सत्यवीर आर्य (भोला) ने संभाली। श्री सतबीर दरोगा, श्री फतेहसिंह आदि का भी विशेष सहयोग रहा।

मानवता की सेवा ही धर्म है

– ओम प्रकाश आर्य

आर्य समाज महर्षि दयानन्द धाम ने दूसरे महीने जरूरतमंद परिवारों को राशन किया प्रदान

आर्य समाज, महर्षि दयानन्द धाम, बाजार हंसली, अमृतसर में श्री ओम प्रकाश आर्य जी की अध्यक्षता में विशेष सत्संग का आयोजन किया गया जिसमें आचार्य दयानन्द शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यजमान बने श्री अशोक वर्मा, पायल पसाहन, मीना पसाहन ने यज्ञाग्नि में आहुतियाँ समर्पित की।

श्री राकेश आर्य, श्री विजय अरोड़ा, सुलोचना आर्या, मीना पसाहन व नीतीश भारती ने सुमधुर भजनों का गायन कर उपस्थित जन–समूह को मंत्र मुग्ध किया।

इस अवसर पर महंत रमेशानन्द सरस्वती, अध्यक्ष एन्टी क्रप्शन मोर्चा, पदम् प्रकाश मेहरा समाज सेवक, जुगल महाजन सेक्रेटरी एन्टीक्रप्शन मोर्चा, विजय सर्राफ, गोल्ड एण्ड सिल्वर एसोसिएशन, डॉ. नवीन आर्य, डॉ. अंजू आर्या डायरेक्टर आयुर्वेद योगासन होली सिटी, इन्द्रपाल आर्य प्रधान आर्य समाज लक्ष्मण सर, इन्द्रजीत आर्य प्रधान आर्य समाज पुतलीघर आदि मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित हुए।

इस अवसर पर श्री ओम प्रकाश आर्य महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने कहा कि मानवता की सेवा ही परम धर्म है। आर्य समाज का उद्देश्य ही मानव मात्र का कल्याण करना है। मनुष्य की मनुष्यता तभी सार्थक है जब वह अपने पास पड़ोस, गली–मुहल्ले के सभी व्यक्तियों को खुशहाल रखें, कोई भी व्यक्ति आपके आस–पास भूखा–प्यासा न रहे। इन्हीं उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आर्य समाज, महर्षि दयानन्द धाम ने राशन वितरण की शुरुआत की है। दूसरे महीने का राशन सभी जरूरतमंद परिवारों को दिया गया।

इस अवसर पर नये साल का कलेण्डर भी रिलीज किया गया। इस कार्य को पूर्ण करने में राज कुमार, अर्जुन कुमार, पंकज वर्मा, नरेश पसाहन, जी.एस. कटारिया पूर्व मैंनेजर सेन्ट्रल बैंक, कमलेश रानी, मीना पसाहन, उमा मेहरा, कोमल, कृष्ण कुमार गोल्डी, रमेश मेहरा, ईशान आदि ने अनथक सहयोग कर कार्यक्रम को सफल बनाया।

– दयानन्द शास्त्री

पृष्ठ 1 का शेष

आचार्य बलदेव जी महाराज की पुण्यतिथि

स्वामी यज्ञमुनि जी ने आचार्य बलदेव जी को आर्य समाज के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय बताते हुए कहा कि उनके द्वारा दिखाये गये रास्ते पर चलकर ही हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। गुरुकुल झज्जर के आचार्य विजयपाल जी ने अपने वक्तव्य में आर्य समाज की शक्ति का विवरण देते हुए कहा कि यदि आर्य समाज संगठित एवं एकजुट होकर कार्य करे तो आर्य समाज के द्वारा चलाया जाने वाला कोई भी आन्दोलन असफल नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि अब वह समय आ गया है जब हम सभी को एकजुट होकर कार्य करना होगा। आज यहां आर्य समाज के सभी प्रमुख संन्यासी एवं नेता विराजमान हैं। यह हम सबके लिए एक प्रसन्नता की बात है।

सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री स्वामी नित्यानन्द जी ने किसान आन्दोलन के सभी पक्षों पर विस्तार से विचार प्रस्तुत किये और बताया कि यह आन्दोलन किसान के भविष्य के लिए निर्णायक होगा, क्योंकि केन्द्र सरकार द्वारा बनाये गये तीन कृषि कानून किसानों के बदले बड़े साहूकारों के हित साधक हैं। किसान को अपनी उपज का लाभकारी मूल्य और न्यूनतम समर्थन मूल्य नहीं मिल रहा है। इसके लिए सरकार को कानून बनाना चाहिए। सरकार इसके लिए तैयार नहीं है इसलिए यह आन्दोलन चल रहा है और हम सभी को इस आन्दोलन में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। स्वामी जी ने आगे कहा कि आचार्य बलदेव जी को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम सभी अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करें।

स्वामी रामवेश जी ने भी अपने वक्तव्य में शराबबन्दी और किसान आन्दोलन का समर्थन किया। आचार्य यशवीर जी ने कहा कि स्व. आचार्य बलदेव जी का जीवन बोलता था। हमें भी अपना जीवन सात्विक एवं पवित्र बनाना चाहिए। यही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ब्रह्मचारी अग्निदेव जी ने अपने ओजस्वी व्याख्यान में युवा पीढ़ी को झकझोरते हुए प्रेरित किया कि उन्हें ब्रह्मचर्य पालन, सदाचार एवं संयम को जीवन में अपनाना चाहिए। आज देश का युवक पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर पतन की ओर जा रहा है जो हमारे देश के भविष्य के लिए एक चुनौती है। उन्होंने बताया कि जिस देश का युवक विलासी, प्रमादी, चरित्रहीन तथा दुराचारी हो जाता है, वह देश कभी सुरक्षित नहीं रह सकता। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे आचार्य बलदेव जी के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को तपस्वी एवं तेजस्वी बनायें।

इस अवसर पर आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री रामनिवास आर्य के भजनों का भी कार्यक्रम रहा। गुरुकुल के स्नातक ब्रह्मचारी भीमदेव जी ने आचार्य राजेन्द्र जी को 51 हजार रुपये से निर्मित यज्ञ पात्र एवं भोजन पात्र तथा 1 लाख 11 हजार रुपये की राशि गुरु दक्षिणा के रूप में भेंटकर सम्मानित किया। इस अवसर पर सर्वश्री रढ़धीर सिंह रेढू एडवोकेट, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र जी, श्री ओम पहलवान एवं श्री सोमवीर पहलवान, श्री सज्जन सिंह राठी आदि भी स्वामी जी के साथ कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

17 फरवरी जयन्ती पर विशेष

आर्य मुसाफिर पं. लेखराम

आर्यों के लिए पण्डित लेखराम जी का सबसे घनिष्ठ परिचय यह है कि वह एक समय 'आर्य गजट' के सम्पादक रहे थे। यों उनका नाम आर्य समाज के मूर्धन्य कर्मवीरों में और अमर हुतात्माओं में है। उन्होंने यह जानते हुए विधर्मियों का खण्डन किया कि इसके फलस्वरूप उन्हें अपने प्राण भी देने पड़ सकते हैं। परन्तु इस कारण वह कभी भी झिझके नहीं।

उनका जन्म सन् 1858 में अविभक्त पंजाब के झेलम जिले के सैयदपुर गांव में हुआ था। उनके पिता मेहता श्री तारासिंह सामान्य स्थिति के ब्राह्मण थे।

आर्यत्व की बड़ी प्रगति

यह सोच कर आज आश्चर्य और आनन्द होता है कि आर्यसमाज के प्रयत्नों के फलस्वरूप भाषा के मामले में देश कितनी लम्बी मंजिल तय कर आया है। उस समय हिन्दी, संस्कृत का कहीं नाम ही नहीं था। सब विद्यालयों में पढ़ाई उर्दू और फारसी में होती थी। लेखराम जी ने भी इन्हीं में शिक्षा पाई। वह अत्यन्त मेधावी थे, परन्तु शिक्षा बहुत दूर तक चली नहीं। आर्थिक परिस्थितियों के कारण पढ़ाई बीच में छोड़कर ही वह सत्रह वर्ष की आयु में एक सिपाही के रूप में पुलिस में भर्ती हो गए।

पंडित लेखराम जी जिस भी काम में जुट जाते थे, उसे पूरी तन्मयता से करते थे। इस कारण उनके अफसर उनसे प्रसन्न थे। पदोन्नति करके उन्हें सार्जेंट बना दिया गया।

अध्यात्म में रूचि

परन्तु लेखराम जी का मन आध्यात्मिक विषयों में अधिक लगता था। वह विचारक थे। मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी के क्रांतिकारी विचारों का भी उन पर प्रभाव पड़ा। सन् 1880 में वह पेशावर में थे। वहीं उनका आर्य समाज से सम्पर्क हुआ। वह स्वामी दयाानन्द जी के विचारों से इतने प्रभावित हुए कि पुलिस की नौकरी छोड़कर आर्य समाज के प्रचार को ही उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया।

अहमदिया मत का खण्डन

उन दिनों मुसलमानों का एक नया सम्प्रदाय चला था अहमदिया सम्प्रदाय। उसका मुख्य केन्द्र कादियान में था, इसलिए इन्हें कादियानी भी कहा जाता था। इनका गुरु स्वयं को पैगम्बर कहता था। पं. लेखराम जी ने अहमदिया सम्प्रदाय की पोल खोलते हुए, तकजीब बुराहीन अहमदिया' नुस्खा खब्त अहमदिया' आदि कई पुस्तकें लिखीं। इन पुस्तकों को मुसलमानों ने भी पसन्द किया और अहमदिया लोगों का बहिष्कार कर दिया। इससे अहमदिया लोग पंडित लेखराम जी के शत्रु हो गए।

कुछ समय बाद पंडित जी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पूर्णकालिक उपदेशक बन गये। उस कार्य में पुलिस की नौकरी जितना वैभव नहीं था, परन्तु मानसिक सन्तोष था कि वह धर्म का प्रचार कर रहे हैं।

पंडित लेखराम जन्म से ही नहीं, कर्म से भी ब्राह्मण थे। उनमें चिन्तन, भाषण और लेखन की क्षमता थी। इतिहास, ईसाइयत और इस्लाम का उन्होंने गहन अध्ययन किया था और इनमें उन्हें प्रामाणिक विद्वान् माना जाता था। सन् 1893 में उनका विवाह कुमारी लक्ष्मी के साथ हुआ। उनका एक पुत्र भी हुआ, पर उसकी छोटी आयु में ही मृत्यु हो गई।

सन् 1890 में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने उन्हें ऋषि दयानन्द का विशद जीवन चरित्र लिखने का काम सौंपा। इस कार्य के सिलसिले में जानकारी एकत्र करने के लिए उन्हें देश के विभिन्न भागों की लम्बी यात्राएं करनी पड़ीं। इसलिए उनका उपनाम 'आर्य मुसाफिर' पड़ गया।

महात्मा मुंशीरामजी द्वारा सराहना

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र की भूमिका में महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने लिखा है कि इसमें सन्देह नहीं कि पंडित लेखराम जैसा अन्वेषक स्वभाव का कार्य ही इस आर्य के लिए उपयुक्त था, परन्तु मेरे विचार से यह पुस्तक पाठकों के हाथ में और शीघ्र पहुंचती और घटनाओं की दृष्टि से और पूर्ण होती, यदि इन घटनाओं को एकत्रित करने का कार्य किसी ऐसे अन्वेषक को दिया गया होता, जिस पर उपदेश देने का दायित्व न होता। कौन नहीं जानता कि पंडित लेखराम को वैदिक (आर्य) धर्म की उन्नति का विचार कभी भी एक स्थान पर बैठने नहीं देता था और यदि उन्होंने कहीं सुन लिया कि अमुक स्थान पर मोहम्मदी अथवा ईसाई मतों के उपदेशक विशेष सफलता प्राप्त कर रहे हैं, तो फिर बड़े से बड़े काम और आवश्यक कार्य को छोड़कर भी उस स्थान पर पहुंचना वह अपना कर्तव्य समझा करते थे।

पं. लेखराम आर्य मुसाफिर
१८५८-१८९७

बलिदान

हृष्ट पुष्ट शरीर व पुलिस की नौकरी के अभ्यास के फलस्वरूप पंडित लेखराम जी को थकान और भूख प्यास का कष्ट, कष्ट ही नहीं लगता था। कई वर्ष के प्रयत्न के बाद उन्होंने ऋषि के जीवन चरित्र सम्बन्धी सामग्री एकत्र कर ली। वह उन्होंने उर्दू में लिखी थी। सन् 1897 में जब वह अपने घर में बैठे उसे पुस्तक रूप में लिख रहे थे, तभी एक काले, गठीले हत्यारे ने आकर उन पर छुरे के वार करने शुरू कर दिए। छाती और पेट पर गहरे घाव हुए। अपना काम पूरा करके हत्यारा भाग निकला। उसे पहचाना नहीं जा सका और न कभी पकड़ा ही जा सका। उनके रक्त की बूंदें महर्षि के जीवन की लिखी जा रही पांडुलिपियों पर पड़ी थीं, इसलिए उन्हें 'रक्त साक्षी' नाम दिया गया।

घायल पण्डित जी को तत्काल अस्पताल ले जाया गया। घाव गहरे थे। उन्हें बचाया नहीं जा सका। 6 मार्च 1897 की रात में उनका प्राणान्त हो गया। उस समय महात्मा मुंशीराम जी उनकी मृत्यु शय्या के पास थे। उस दिन उन्हें पता नहीं था कि बीस एक बरस बाद उन्हें भी इसी प्रकार धर्म की वेदी पर अपना बलिदान देना होगा।

आर्य जनों के लिए पण्डित लेखराम का सन्देश था कि 'आर्य समाज का लेखन (तहरीर) और भाषण (तकरीर) का कार्य बन्द नहीं होना चाहिए।

महात्मा हंसराज जी की श्रद्धांजति

पं. लेखराम जी के विषय में महात्मा हंसराज जी ने लिखा हैः मैंने धर्मवीर पं. लेखराम जी के दर्शन उस समय किए, जबकि उन्होंने वैदिक धर्म के प्रचार को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया ही था। उनकी आकृति बड़ी थी, परन्तु उनके हृदय में धर्मप्रेम की अग्नि बड़ी प्रचंडता से प्रज्ज्वलित थी। कोई समय नहीं, जब उन्हें आर्यसमाज का ध्यान न हो। कोई भी कष्ट ऐसा नहीं था, जिसे वह आर्य समाज के लिए सहन करने को उद्यत न हों। यदि पांच सौ मील से भी तार आया है कि कोई हिन्दू अपने धर्म का त्याग करने लगा है, तो पण्डित लेखराम वहां पहुंच कर कार्य करने के लिए उद्यत हैं, न मार्ग की कठिनाई का विचार है; न ही इस बात का विचार है कि जहां जाएंगे, वहां भोजन मिलना भी कठिन है; विरोधियों की संख्या सहस्रगुणा है और सहायक सम्भवतः कोई भी न हो; परन्तु फिर भी धर्मवीर अपने यज्ञ पर अटल हैं; अपने मिशन की पूर्ति के लिए उपस्थित है।

परम तपस्वी

उनका जीवन तपस्या का जीवन था। वह कष्ट सहन कर सकते थे तथा करते थे। प्रतिदिन यात्रा में रहना कोई साधारण बात नहीं। उनको इस बात की तनिक भी चिन्ता न थी कि उन्हें धनिकों जैसा भोजन प्राप्त होता है अथवा निर्धनों जैसा। जो कुछ प्राप्त हुआ, उसी को खा पीकर, अपितु कई बार भूखा रहकर भी वह उपदेश देते थे, शास्त्रार्थ करते थे। उनकी वेशभूषा भी सादा थी।

प्राणों का निर्मोही निर्भय विप्र

उनमें अद्भुत निर्भीकता थी। सहस्रों विरोधियों के मध्य खड़े होकर भी वे उनके मत का खण्डन करने से न डरते थे। उनको इस बात की कतई चिन्ता न थी कि मेरा जीवन सुरक्षित है अथवा नहीं। मिर्जाइयों के सामना के लिए वह प्रतिक्षण डटे रहते थे।

सर्वस्व समर्पण करने की चाह

आर्य समाज के लिए उनमें अत्यन्त प्रेम था, इस पर फिदा (समर्पित) थे। न अपने घर की कुछ चिन्ता थी तथा न मित्रों का कुछ विचार था। जिस प्रकार जैसूवाट मिशनरी अपने निश्चय के पक्के थे तथा अपने मिशन को सबसे बढ़कर समझते थे, इसी प्रकार यह धर्मवीर भी आर्यसमाज तथा वैदिक प्रचार से बढ़कर किसी उद्देश्य को स्वीकार नहीं करते थे। यही उनके जीवन की लगन थी। इसके लिए वह सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार थे।

घातक इस बात में तो सफल हुआ कि पंडित जी के जीवन को समाप्त कर दें, परन्तु उसने पंडित जी के जीवन को सहस्रों गुणा अधिक उज्ज्वल तथा पवित्र बना दिया तथा आर्यसमाज की जड़ों को भी दृढ़ कर दिया क्योंकि शहीद का रक्त धर्म के भवन का सीमेंट (गारा चूना) होता है।

मेरा लक्ष्य क्या है?

जो मत मतान्तर के परस्पर विरूद्ध झगड़े हैं, उनको मैं पसन्द नहीं करता। क्योंकि इन्हीं मत वालों ने अपने मतों का प्रचार कर मनुष्यों को फंसा के परस्पर शत्रु बना दिये हैं। इस बात को काट, सर्व सत्य का प्रचार कर, सबको एक्य मत में करा, द्वेष छुड़ा, परस्पर में दृढ़ प्रीति युक्त कराके सबसे सबको सुख लाभ पहुँचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है।

- महर्षि दयानन्द सरस्वती

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन संम्पन्न
युवाओं को जोड़ने के लिए वैदिक कार्यशालाओं का हो आयोजन –भुवनेश खोसला
युवाओं में संस्कृति के प्रति लगाव लायेगे – अनिल आर्य

शनिवार, 30 जनवरी 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के 43वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में 'अंतरराष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन' का ऑनलाइन जूम एप पर आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री ईश आर्य (प्रभारी, पतंजलि योग समिति हरियाणा) ने की व संचालन आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने किया।

मुख्य अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा, अमेरिका के प्रधान श्री भुवनेश खोसला ने कहा की, नयी पीढ़ी को भारतीय संस्कृति से जोड़ने के लिए यह आवश्यक हो गया है कि हम वैदिक साहित्य, वेद मंत्रों व सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थो को सरल भाषा में समझाने की विशेष योजना बनायें जिससे नयी पीढ़ी उसे पढ़ व समझ सके। कुछ ऐसे पाठ्यक्रम, पत्राचार कोर्स बनाने होंगे जिससे कम समय में युवा अपनी संस्कृति से परिचित हो सकें। हमारे पास सर्वश्रेष्ठ ज्ञान है, पर ठीक से प्रस्तुत नहीं कर पाते, इसमें सुधार की आवश्यकता है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि संस्कृति हमारी प्राण है, लेकिन युवा उससे विमुख होते जा रहे हैं यह चिंता की बात है। आने वाली पीढ़ी को अपने महापुरुषों पर गर्व करना सिखायें व देशभक्ति की शिक्षा प्रदान करें। समाज में बढ़ता पाखंड, अंधविश्वास, अंधश्रद्धा पैदा कर रहा है जिससे सजग रहने की आवश्यकता है। आर्य समाज को सही दिशा देने व अंधविश्वास से बचाने का कार्य करना है।

न्यूजीलैंड से हरीश सचदेवा ने कहा कि हम भारतीयों को इकट्ठा करके यज्ञ के द्वारा जोड़ने का कार्य कर रहे हैं। कनाडा से राजू कपिला ने भी अपनी संस्कृति पर गर्व करने व मिट्टी से जुड़े रहने का आह्वान किया। साऊथ अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ. रामबिलास ने कहा कि महर्षि दयानंद की मान्यताएं सार्वभौमिक है पूरे विश्व को जोड़ने का कार्य करना है।

मॉरीशस आर्य समाज के प्रधान श्री राम माधव ने भी बताया कि मॉरीशस में 250 आर्य समाज व शिक्षण संस्थान चल रहे हैं, हम सभी भारत के मूल से जुड़े हुए हैं।

युवा प्रवक्ता आस्था आर्या, नरेंद्र आहूजा विवेक (चंडीगढ़), आचार्य वीरेन्द्र विक्रम, दीप्ति सपरा, प्रतिभा कटारिया, यशोवीर आर्य, महेंद्र भाई, देवेन्द्र भगत, दुर्गेश आर्य, धर्मपाल आर्य, प्रवीण आर्य (गाजियाबाद), राजन रखेजा, वंदना जावा, नरेश खन्ना आदि ने भी अपने विचार रखे। आचार्य संजीव रूप जी बदायूं की संगीत मय कथा का सभी ने आंनद लिया। प्रधान शिक्षक सौरभ गुप्ता के निर्देशन में आर्य युवक/युवतियों ने भव्य व्यायाम प्रदर्शन किया।

।। ओ३म्।।

आर्य पर्वों की सूची

विक्रमी सम्वत् 2077–78 तदनुसार सन् 2021 ई.

क्र.सं.	पर्व नाम	चन्द्र तिथि	सम्वत्	अंग्रेजी तिथि	दिवस
1.	मकर संक्रान्ति	पौष सुदी-1	2077	14-01-2021	गुरुवार
2.	वसन्त पंचमी	माघ सुदी-5	2077	16-02-2021	मंगलवार
3.	सीताष्टमी	फाल्गुन बदी-8	2077	06-03-2021	शनिवार
4.	महर्षि दयानन्द जन्म दिवस	फाल्गुन बदी-10	2077	08-03-2021	सोमवार
5.	ऋषिबोधोत्सव (शिवरात्रि)	फाल्गुन बदी-13	2077	11-03-2021	गुरुवार
6.	लेखराम तृतीया	फाल्गुन सुदी-3	2077	16-03-2021	मंगलवार
7.	मिलन पर्व/नवसंस्येष्टि (होली)	फाल्गुन सुदी-15	2077	28-03-2021	रविवार
		चैत्र बदी-1		29-03-2021	सोमवार
8.	आर्यसमाज स्थापना दिवस (नव-सम्वत्सर)	चैत्र सुदी-1	2078	13-04-2021	मंगलवार
9.	रामनवमी	चैत्र सुदी-9	2078	21-04-2021	बुधवार
10.	वैशाखी	वैशाख सुदी-2	2078	13-05-2021	गुरुवार
11.	हरि तृतीया (हरियाली तीज)	श्रावण सुदी-3	2078	11-08-2021	बुधवार
12.	श्रावणी उपाकर्म (रक्षा बन्धन)	श्रावण सुदी-15	2078	22-08-2021	रविवार
13.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्रपद बदी-8	2078	30-08-2021	सोमवार
14.	विजयदशमी/दशहरा	आश्विन सुदी-10	2078	15-10-2021	शुक्रवार
15.	गुरुवर स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस	आश्विन सुदी-12	2078	17-10-2021	रविवार
16.	महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली)	कार्तिक बदी-15	2078	04-11-2021	गुरुवार
17.	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष वदी-4	2078	23-12-2021	गुरुवार

विशेष टिप्पणी : 1. आर्यसमाजें एवं आर्य जन इन पर्वों को उत्साहपूर्वक मनाएं।
2. देशी तिथियों में घट बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

स्वामी आर्यवेश
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
''दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, (निकट रामलीला मैदान), नई दिल्ली-2,
दूरभाष : 011-23274771

आर्य समाज महाराजपुर मध्य प्रदेश के वर्तमान प्रधान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश विदर्भ के अन्तरंग सदस्य

श्री दीनदयाल आर्य जी का असामयिक निधन

आर्य समाज महाराजपुर, मध्य प्रदेश के वर्तमान प्रधान और आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश विदर्भ के अन्तरंग सदस्य श्री दीनदयाल आर्य जी का विगत दिनों असमय निधन हो गया है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उनके निधन पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री दीनदयाल जी आर्य समाज के कर्मठ एवं जुझारू कार्यकर्ताओं में से एक थे, वे सदैव आर्य समाज संगठन को सुदृढ़ बनाने एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार में सहयोग देते रहते थे। आर्य समाज महाराजपुर के शताब्दी समारोह के अवसर पर श्री दीनदयाल आर्य जी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही थी और वे अनेक अवसरों पर मुझे मिलते रहते थे, वे सदैव प्रसन्नचित एवं गम्भीर रहते थे। उन्होंने मुझसे मिलकर मध्य प्रदेश में आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के लिए कई सुझाव दिये थे। आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री जयनारायण आर्य जी के वे दायें हाथ के रूप में कार्य कर रहे थे। इन दोनों की जोड़ी आर्य समाज के सभी राष्ट्रीय कार्यक्रमों में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। शताब्दी समारोह के अवसर पर उनके नेतृत्व में आर्य समाज महाराजपुर की प्रबन्ध व्यवस्था अत्यन्त प्रशंसनीय रही। ऐसे कर्मठ एवं समर्पित महानुभाव का अचानक निधन आर्य समाज संगठन एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। उनके निधन से मुझे व्यक्तिगत रूप से भी गहरा आघात पहुँचा है। परन्तु परमात्मा के नियम के सामने हम सब लोगों को नतमस्तक होने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है।

मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री दीनदयाल आर्य जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा शोक संतप्त परिवार एवं उनके शुभ चिन्तकों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत
यजुर्वेद भाष्य
भारी छूट पर उपलब्ध
250 रुपये मूल्य का यजुर्वेद भाष्य
मात्र 150 रुपये में दिया जा रहा है
(डाक व्यय अतिरिक्त)
(जल्दी करें ग्रन्थ सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है)
प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
''दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

स्व. महाशय मनफूल सिंह आर्य की पुण्यतिथि पर प्रेरणा सभा एवं यज्ञ का किया गया आयोजन

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता के रूप में हुए सम्मिलित

प्रसिद्ध समाजसेवी एवं आर्य समाज के नेता स्व. महाशय मनफूल सिंह आर्य की पुण्य तिथि के अवसर पर 30 जनवरी, 2021 को पलवल में प्रेरणा सभा एवं यज्ञ का आयोजन किया गया। आयोजन के सूत्रधार स्व. महाशय जी के सुयोग्य सुपुत्र डॉ. धर्मप्रकाश आर्य के निवास पर आयोजित इस कार्यक्रम में यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने यज्ञ को सम्पादित किया और उनके साथ आचार्य देशराज जी ने सहयोग किया। प्रेरणा सभा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त, स्वामी श्रद्धानन्द जी, श्री जीवानन्द जी नैष्ठिक रेवाड़ी, श्री राजेन्द्र सिंह बीसला पूर्व विधायक, श्री दीपक मंगला विधायक पलवल, श्री भजन लाल आर्य मितरौल, श्री जगवीर सिंह आर्य, श्री जयप्रकाश आर्य, आर्य समाज जवाहरनगर आदि महानुभाव उपस्थित थे। इनके अतिरिक्त प्रसद्धि भजनोपदेशक श्री ओम प्रकाश फ्रंटियर मेल, श्री सत्यवीर भाटी, श्रीमती रेखा आर्या, श्री नरेदव बेनीवाल आदि के भजनों का शानदार कार्यक्रम रहा। कार्यक्रम का कुशल संयोजन श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री ने किया।

इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने स्व. महाशय मनफूल सिंह जी को आर्य समाज का एक मजबूत स्तम्भ बताया। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के इतिहास में स्वामी इन्द्रवेश जी व स्वामी अग्निवेश जी द्वारा आर्य समाज के राजनैतिक मंच 'आर्यसभा' की घोषणा एवं उसे मूर्त रूप देने के लिए जब कार्य शुरू किया गया तो सबसे पहला चुनाव पलवल विधानसभा से ही लड़ा गया था और उस समय स्व. महाशय मनफूल सिंह आर्य सबसे अग्रिम पंक्ति के नेताओं में से थे, जिन्होंने 'आर्यसभा' का झण्डा अपने हाथ में थामकर पूरे फरीदाबाद जिले में उसका प्रचार–प्रसार किया था। स्व. महाशय जी का जीवन सात्विक एवं पवित्र था और वे स्पष्टवादी व्यक्ति थे। उनके सुपुत्र डॉ. धर्मप्रकाश जी भी उनके पदचिन्हों पर चलते हुए आर्य समाज के कार्य को विशेष गति प्रदान कर रहे हैं। स्वामी जी ने कहा कि डॉ. धर्मप्रकाश जी अपने पूज्य पिता जी की स्मृति में प्रतिवर्ष यह आयोजन करते हैं और सैकड़ों लोगों को वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार करने के लिए प्रेरित करते हैं। ऐसे ही हम सभी को अपने पूर्वजों को याद करने के लिए ऐसे आयोजन करने चाहिए। स्वामी आर्यवेश जी ने सभी आयोजकों को सफल कार्यक्रम के लिए साधुवाद दिया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ईश्वरोपासना से व्यक्ति को क्या लाभ होता है इस पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ईश्वर की उपासना से आत्मा में विशेष बल एवं शक्ति आती है और उसके द्वारा व्यक्ति पहाड़ के समान दुःख एवं संकट से भी लड़ सकता है। उन्होंने कहा स्व. महाशय मनफूल सिंह जी सच्चे ईश्वर भक्त थे और वे कभी भी किसी स्थिति में विचलित नहीं हुए, बल्कि हर संघर्ष में उन्होंने बढ़–चढ़कर नेतृत्व किया।

श्री राजेन्द्र सिंह बीसला ने आर्य समाज के प्रचार–प्रसार की महती आवश्यकता बताते हुए कहा कि वर्तमान समय में आर्य समाज के सिवाय और कोई संस्था दिखाई नहीं देती जो देश एवं वैदिक संस्कृति के लिए कार्य करती हो। आर्यों को स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में संगठित होकर अपने कार्य को तेज करना चाहिए और पूरे देश को दिशा देनी चाहिए।

स्थानीय विधायक श्री दीपक मंगला जी ने भी स्व. महाशय जी को श्रद्धांजलि अर्पित की और कहा कि महाशय जी का जीवन हम सबके लिए प्रेरणा देने वाला रहा है। कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहा।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के साथ डॉ. धर्मप्रकाश आर्य जी

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।